तीसरा रास्ता

रजि० नं० बी० ४४४८

# हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ३४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २० अक्तूबर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

## राष्ट्रीय योजना—दो निष्ठायें : १

पाठक योजना-समितिकी पहली पंच वर्षीय योजनाकी कच्ची रिपोर्ट पर सर्वश्री कुमारप्पा, श्रीमन्नारायण अग्रवाल और विनोबाकी जोरदार आलोचनाओं देख चुके हैं। प्रस्तुत लेखमें अिस विषयका विचार कुछ अलग ढंगसे हुआ है। मंशा यह है कि योजनाके प्रति योजना-समितिके सदस्यों और सर्वोदय-कार्यकर्ताओंके दृष्टिकोणका बुनियादी फर्क लोगों और अधिकारियोंके सामने आ जाय।

'लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयाऽनघ' — हे अर्जुन, मैं बहुत पहले यह कह चुका हूं कि अिस लोकमें दो तरहकी निष्ठाअें हैं। —(गीता ३-३) गीताका यह विधान ज्ञान और कर्मकी निष्ठाओंके विषयमें किया गया है। पर वह जीवनकी दूसरी बहुतेरी बातोंके लिअे भी लागू होता है। योजना-समितिकी योजनाकी कच्ची रूपरेखा पढ़कर मुझे लगा कि योजनाके बारेमें समिति और सर्वोदयके दृष्टिकोणमें भी निष्ठाका अैसा ही बुनियादी फर्क है।

हम सब अपने देशसे प्रेम करते हैं और अुसकी वृद्धि और समृद्धि चाहते हैं। लेकिन देशका, भारतका अर्थ अेक ओर तो अुस नामसे प्रसिद्ध राजनीतिक प्रदेश और अुसकी जमीन, नदियां, समुद्र, खानें, पशु तथा बिजली आदि शक्तियोंके साधन हैं; दूसरी ओर अुसका अर्थ है अुसकी प्रजा — पुरुष, स्त्रियां, बच्चे — और अैसे पालित पशु जो अुसके सामाजिक और आर्थिक जीवनका अंग बन गये हैं। यह कहना गलत होगा कि कोओी देशप्रेमी भारतके अिन दो हिस्सोंमें से किसी अेकको ही देखता है, और दूसरेको बिलकुल भूल जाता है। लेकिन यह कहा जा सकता है कि दोनोंके विकासके लिअे कोओी योजना बनायी जाय और अुसमें पूर्वापरका क्रम स्थिर किया जाय, तो पता चलेगा कि कुछ लोग अुसके प्राकृतिक साधनोंके विकास पर ज्यादा जोर देते हैं और दूसरोंकी नजर अुसकी मनुष्य तथा पशुप्रजाके संवर्धन पर रहती है। किसी भी हिस्सेकी पूरी अवहेलना तो नहीं की जा सकती, लेकिन दोमें से किसी अेकको मुख्य मान लेनेसे पूरी योजनामें बड़ा फर्क पड़ जायगा।

योजना-समितिने अपनी योजनामें जो दृष्टिकोण अपनाया है, अुसमें देशके प्राकृतिक साधनोंके विकासको तरजीह दी गयी है। और अिस अुद्देश्यको हासिल करनेके लिअे अुसने 'मिश्र अर्थ-रचनाका' यानी अंशतः पूंजीवादी और अंशतः मार्क्सवादी अर्थ-रचनाका आश्रय लिया है। अपनी पुस्तक 'गांधी और मार्क्स' में मैंने समझाया है कि जीवनके प्रति पूंजीवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोण अेक दूसरेसे बुनियादी तौर पर भिन्न नहीं हैं। दोनोंमें बाहरी तौर पर दुश्मनीका आभास आता है, पर वह दुश्मनी किसी अेक ही अिनामके लिअे कोशिश कर रहे दो प्रतियोगियोंकी दुश्मनी है। वह दुश्मनी वैसी ही है जैसी कि १८ वीं शताब्दीमें ब्रिटिश और फरासीसी 'अीस्ट अिन्डिया कम्पनियों' में थी। दोनों भारतमें अपनी अपनी अेकछत्र राजनीतिक और व्यापारिक प्रभुता कायम करना चाहती थीं।

दोनों पद्धतियोंका संयोग शक्य है, क्योंकि जड़में जीवनके प्रति दोनोंका दृष्टिकोण समान है। पूंजीवाद व्यक्ति-संचालित पूंजीवाद है और मार्क्सीय समाजवाद (या 'रूसी साम्यवाद') राष्ट्र-पूंजीवाद है; और यह 'मिश्र अर्थ-रचना' मानो अिन दो प्रतियोगी पूंजीवादियों द्वारा किया हुआ समझौता है। अिन दोनोंका मौजूदा भारतमें कुछ बल है, अिस मजबूरीका खयाल करके आयोजनकारोंने समझ लिया है कि तत्काल संघर्ष मोल लेनेमें बुद्धिमानी नहीं है।

पूंजीवाद और राष्ट्र-पूंजीवाद (मार्क्सीय समाजवाद) के समान बुनियादी सिद्धान्त ये हैं:

१. मनुष्यका विकास आसपासकी परिस्थितियोंके विकास पर निर्भर करता है।

२. अिसलिअे, हमारी सारी योजनाका ध्येय और लक्ष्य देशके प्राकृतिक साधनोंका यानी जमीन, खानों, समुद्र और अुनकी पैदाअिशका तथा ताप, प्रकाश, बिजली, चुम्बकत्व, अणु और अिन शक्तियोंके अनुकूल यंत्रों आदिका विकास और पूरा अुपयोग होना चाहिये।

३. योजनासे देशके भीतर और बाहर व्यापारकी बढ़ती होनी चाहिये और ज्यादा मुनाफा आना चाहिये।

४. प्राकृतिक साधनोंके अुपयोग और व्यापारके विस्तारकी मददसे प्रकृति और जीवनके सदैव संघर्षको देखते हुअे जितने लोगोंका जीवनमान अुठाना संभव हो, अुठाना चाहिये।

५. अिन अुद्देश्योंकी प्राप्तिके साधन ये हैं: —

(क) पैसा धनका सभीका मान्य किया हुआ और कानूनी माध्यम तथा प्रतीक है, अिसलिअे अुसका अुपयोग और केन्द्रीय रूपमें संचय। (ख) अुत्पादन, बंटवारा तथा बीचकी दूसरी क्रियाओंका नियंत्रण। (ग) अूपर कहे गये अुद्देश्योंको खयालमें रखते हुअे जरूरतके अनुसार यथासंभव ज्यादा आदमियोंको काम और धन्धा देना, यानी अेक तरफ मनुष्य और पशु और दूसरी तरफ प्राकृतिक शक्तियोंके बीच संघर्ष हो, तो मनुष्य या पशुको काम देनेकी परवाह नहीं की जा सकती। प्राकृतिक शक्तिके विकासको ही ज्यादा महत्त्व दिया जाय। अिसी तरह सभीके लिअे काम और ज्यादा लोगोंके जीवन-मानका मुकाबला हो, तो सबको काम देनेकी अपेक्षा यथासंभव ज्यादा आदमियोंके लिअे बेहतर जीवनमान बनाये रखने पर ज्यादा ध्यान दिया जाय। (घ) अिसलिअे मालके अुत्पादन, लाने लें जाने और बांटनेका काम करनेमें नियम यह होगा: सारा काम जितना ज्यादा और जितनी जल्दी हो सके, करो और अिसमें कमसे कम आदमियों और पशुओंका अुपयोग करो; लोगोंको नयी-नयी जरूरतें और

www.vinoba.in

तदनुसार नये-नये धन्धे खोलकर रोजगार दिया जाय, पर अिसके लिअे अुत्पादन और लाने ले जानेके साधनोंकी गति धीमी न की जाय। (च) दुनिया अितनी बड़ी नहीं है कि साधारण क्रममें सन्तानकी जितनी वृद्धि होती रहती है, अुसका पूरा बोझ अुठा सके। अिसलिअे (छ) प्रकृति और मानव-जीवनके आपसी संघर्षसे जो सवाल पैदा होते हैं, अुनको हल करनेके लिअे, युद्ध और अकाल जैसी आकस्मिक आपत्तियोंके सिवा, जनसंख्याको कम करनेके लिअे कुछ मानवकृत विधायक अुपाय करना चाहिये; अुदाहरणके लिअे संतति-निरोधके लिअे अुपयुक्त विविध डॉक्टरी अुपाय तथा अैसी आदतों या औषधियोंका व्यवहार, जिनसे प्रजननकी शक्ति या तो कम हो जाय या नष्ट हो जाय।

६. जीवन और प्रकृतिमें संघर्ष अनिवार्य है, अिसलिअे हरअेक आदमीको धंधा देनेका जिम्मा नहीं लिया जा सकता। अस्थायी किस्मकी अुग्र बेकारीको अपने प्राप्त साधनोंकी सीमामें भीख या दान और राहतके काम तथा बेकारोंके लिअे काम-घर आदि खोलकर हल करना चाहिये।

७. सारी दुनिया आखिर अेक और अखंड है, अिसलिअे अन्तिम अुद्देश्य विश्व-राज्य कायम करना है। अतः राष्ट्रीय अथवा प्रादेशिक स्वयंपूर्णताका लक्ष्य अेक अकाट्य सिद्धान्तकी तरह स्वीकार नहीं किया जा सकता। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और यातायातके जरिये हम अपना कच्चा या पक्का माल बाहर भेजकर विदेशोंसे अपनी जरूरतकी चीजें मंगवा सकते हैं। अगर महायुद्ध टाला जा सके, तो अैसी व्यवस्था असंभव नहीं है। अपनी जरूरतोंके लिअे दूसरे देशों पर निर्भर रहनेमें सिद्धान्तकी दृष्टिसे कोअी दोष नहीं है।

८. मानव-समाजका आजका व्यवहार और अुसका स्वभाव देखते हुअे, भौतिक बलका आश्रय लिये बिना विश्व-राज्य या स्थायी शांति कायम करनेकी आशा करना व्यावहारिक नहीं मालूम होता। प्रेम अच्छी चीज है और आवश्यक है, और अुसकी मददकी कद्र होनी चाहिये। लेकिन शांति और सुरक्षाके लिअे अेकमात्र प्रेम पर निर्भर नहीं कर सकते। अिसके सिवा, युद्धके क्षेत्रमें यंत्र-विज्ञानने जो अुन्नति की है, अुसका खयाल करते हुअे शांतिकी स्थायी या दीर्घ-कालिक स्थापनाके लिअे आधुनिक शस्त्रास्त्रों और सेनाओंका रखना जरूरी है।

मेरा खयाल है कि हमारी योजना-समितिने अपनी योजना अिन्हीं सिद्धान्तोंके आधार पर बनायी है; मैं आशा करता हूं कि अैसा कहकर मैं अुनके साथ कोअी अन्याय नहीं कर रहा हूं।

अगले लेखमें मैं योजनाके विषयमें सर्वोदयके दृष्टिकोण और सिद्धांतोंकी चर्चा करूंगा।

वर्धा, २६-९-'५१ कि० घ० मशरूवाला
(अंग्रेजीसे)

---

## शिमलामें चरखा-जयंती

शिमलामें चन्द व्यक्तियों पर निर्भर अेक 'सर्वोदय समाज' नामकी संस्था काम कर रही है। यह समाज हरिजनोंकी सेवाके लिअे ३० बच्चोंका अेक बालाश्रम चला रहा है। गत २ अक्तूबरको गांधी जयंती मनाते हुअे अिस समाजने ८३ घंटेकी अखंड कताअी, गीता-पारायण तथा दोनों समय प्रार्थना आदिका आयोजन किया, जिसमें बच्चोंने भी भाग लिया। अेक सदस्यने ८३ घण्टेका सूत, जिसका वज़न तीन पाव था, बालाश्रमको दानके रूपमें दिया। अखंड कताअीमें भाग लेकर दूसरे सदस्योंने भी १५ छटांक सूत कातकर आश्रमको दान दिया।

राजगोपालन

# साम्यवाद और राष्ट्रीय पूंजीवादमें भ्रांति

'साम्यवादके बारेमें' शीर्षक अपने लेखमें श्री मशरूवालाने तथा कॉमरेड स० अ० डांगेके साथके अपने पत्रव्यवहारमें श्री विनोबा भावेने वास्तविक साम्यवादकी चर्चा नहीं की है। जिन आनुषंगिक सवालोंकी चर्चा अुन्होंने की है, अुनका वास्तविक साम्यवादसे कोअी संबंध नहीं है, अगरचे अुनको अिस नामसे पुकारा जाता है। श्री मशरूवाला, श्री विनोबा और श्री भारतन् कुमारप्पा — किसीने भी अिस सवालका विचार नहीं किया कि कम्युनिस्ट नामधारी दल दुनिया पर जो चीज लादना चाहता है, वह सचमुच क्या सच्चा साम्यवाद है? पूंजीवादियों तकने यह मान लिया है कि रूसमें जो प्रणाली चल रही है, वह सच्चा साम्यवाद है! अुनको यह नहीं सूझता कि वह और चाहे जो हो, साम्यवाद हरगिज नहीं है। अिस तरह वे बोलशेविकोंको साम्यवादी होनेका अैसा आदर देते हैं, जिसके पात्र वे नहीं हैं। वे नहीं जानते कि दुनियाकी शांतिके लिअे खतरा साम्यवादसे नहीं, रूसी बोलशेविक तानाशाहीसे है। वे अेक अैसे शब्द पर झगड़ते हैं, जिसके अर्थ और अभिप्रायका अुन्हें कोअी पता नहीं है।

मैं आपको कहना चाहता हूं कि कोअी भी मूलग्राही मार्क्सवादी अिस बातकी हामी भरेगा कि बोलशेविक लोग रूसमें जो कुछ करते हैं तथा दुनियामें अन्यत्र जो कुछ करनेकी कोशिश कर रहे हैं, वह महज अेक नये प्रकारका पूंजीवाद ही है; और पूंजीवादियों तथा बोलशेविकोंका झगड़ा साम्यवाद पर नहीं है, बल्कि अिस बात पर है कि किस तरहका पूंजीवाद चलना चाहिये। दोनोंकी जड़में विचारकी बुनियाद अेक ही है और वह पूंजीवादी है।

बोलशेविकोंके खिलाफ पूंजीवादियोंका झगड़ा यह है कि बोलशेविक लोग स्वामित्वका अधिकार अलग-अलग व्यक्तियोंके हाथमें नहीं देना चाहते। अुनकी जगह वे अपने दलका राज्य कायम करना चाहते हैं और अुसे ही राष्ट्रकी सारी संपत्तिका अेकमात्र मालिक बनाना चाहते हैं। दोनोंकी व्यवस्थाका तरीका अेक ही है; यानी पूंजीवादी मालिकोंकी तरह ये भी सारी प्रजाको वैतनभोगी गुलाम बनाना चाहते हैं। दोनोंमें जो झगड़ा है वह यह नहीं है कि पूंजीवाद बिलकुल खतम कर दिया जाय और साम्यवादका प्रवर्तन किया जाय। झगड़ेका मुद्दा यह है कि पूंजीवादी प्रणालीका संचालन कौन करे। दोनों ही साम्यवादके खिलाफ हैं। पूंजीवादी और बोलशेविक दोनोंमें से कोअी भी साम्यवादकी बात नहीं करते। लेकिन अजीब बात है कि बोलशेविक प्रणालीको साम्यवाद माना जाता है और पूंजीवादका विरोधी समझा जाता है! यह प्रणाली दरअसल राष्ट्रीय पूंजीवाद है। यानी, अैसा पूंजीवाद, जिसकी बागडोर राज्यके हाथमें है और जिसका संचालन 'साम्यवादी' नामकी ओटमें बोलशेविक दल करता है। अिस प्रणालीके तीनों रूप मार्क्सवाद, लेनिनवाद या स्टालिनवाद राज्यकी मालिकी और राष्ट्रीय पूंजीवादका समर्थन करते हैं तथा वे अुसे दुनियामें हर जगह मास्कोकी बोलशेविक पार्टीके अधीन रखना चाहते हैं। (यह बात, चाहें तो, टीटोसे पूछी जा सकती है। वह भी मार्क्सवादी और लेनिनवादी होनेका दावा करता है।)

क्या मैं यह समझूं कि अगर बोलशेविक साम्यवाद मतदान और स्वेच्छापूर्वक त्यागकी वैधानिक राहसे शांति और अहिंसापूर्वक लाया जाय, तो फिर सर्वश्री विनोबा, मशरूवाला और कुमारप्पाकी अुस पर कोअी आपत्ति नहीं होगी, अगरचे वह पुरानीकी जगह अेक नयी गुलामी मात्र होगी? क्या अुनका विरोध अिस नयी गुलामी तक पहुंचनेके तरीकेसे ही है?

बोलशेविकोंको अिन शांतिमय अुपायों पर कोअी आपत्ति नहीं होगी। लेकिन वे सोचते हैं या जानते हैं कि छल और बलका प्रयोग किये बिना अुसे लाना संभव नहीं है। अिसलिअे वे मतदान और स्वेच्छापूर्वक त्यागके तरीकेमें विश्वास नहीं करते। अतः वे कहते हैं: अगर तुम हमारा पूंजीवाद राजी-खुशीसे स्वीकार कर लेते

www.vinoba.in

हो, तो बहुत अच्छी बात है; लेकिन अगर तुम अैसा नहीं करते, तो हम लोग प्रतीक्षा करनेवाले नहीं हैं। या तो तुम्हें समर्पण करना है, या तुम कत्ल कर दिये जाओगे। मजदूरों, किसानों, मध्यमवर्गके लोगों तथा नौकर-पेशा लोगोंको भी यही डर दिखाया जाता है, पर अुनके लिअे वह चालाकीकी चाशनीमें मीठा करके दिखाया जाता है। वस्तुस्थिति यह है कि अिन लोगोंको भी अुनके राज्यमें गुलामीका जुआ ढोना पड़ता है। अगर पूंजीवादी खुद कत्ल किये जानेके पहले अिन कथित कम्युनिस्टोंको खत्म कर देना चाहते हैं, तो कम्युनिस्टोंको शिकायतका कोअी अधिकार नहीं है। क्योंकि कम्युनिस्ट भी यदि हो सके तो पूंजीवादियोंके साथ यही बरताव करना चाहते हैं। यह तो पूंजीके दो प्रतियोगी दावेदारोंका संघर्ष है, जिनमें से अेक व्यक्ति खानगी पूंजीवादकी रक्षा करना चाहता है और दूसरा राष्ट्रीय पूंजीवादके लिअे लड़ता है।

बोलशेविकोंके तरीकेसे राजनीतिक साम्यवाद आ ही नहीं सकता। साम्यवादका अर्थ है अखंडित अविभाजित समाज। लेकिन बोलशेविक और दूसरे मार्क्सवादी तो सारी प्रजा पर अपने-अपने दलका राज्य कायम करना चाहते हैं। वे आपसमें अेक तरहका साम्यवाद पालते होंगे, लेकिन प्रजाके साथ अुनका रिश्ता पूंजीवादियोंकी तरह शासक और मालिकका ही होता है और वे वेतनभोगी गुलामोंकी मेहनत पर जीते हैं। सच्चे साम्यवादमें मालिक और नौकर हो ही नहीं सकते। मालिक और नौकरकी व्यवस्था पूंजीवादका खास लक्षण है। और अुसे छोड़नेके लिअे न तो पूंजीवादी तैयार हैं, न बोलशेविक। बोलशेविक कहते जरूर हैं कि आगे चलकर — अन्तमें राज्यकी संस्थाको, अपने शासनको, वे मिटा देना चाहते हैं और मालिक-नौकरके मौजूदा सम्बन्ध खतम कर देना चाहते हैं। लेकिन नौकरी और मजदूरीकी प्रथाको कायम करने और लगातार चलानेके बाद! अिस तरह तो पूंजीवादी भी बोलशेविकोंकी भाषाकी नकल कर सकते हैं और कह सकते हैं कि वे भी आगे चलकर कभी, अपनी सुविधासे मालिक-नौकरके संबंध खतम करना चाहते हैं; हां, वह अनुकूल समय आने दीजिये, जब सब लोग मतदानकी राहसे वैसा करनेको तैयार हो जायंगे। वे भी कह सकते हैं कि अिन दोनों अवस्थाओंके बीच अेक संधि और संक्रातिका काल होता है और अुसे तो पार करना ही पड़ेगा। हमारा शासन अुसी संक्रान्ति कालके लिअे है। दोनों अिस बातको, बिना किसी लज्जाके, कह सकते हैं और दोनों समानरूपसे अच्छे कम्युनिस्ट होनेका दावा कर सकते हैं।

कॉमरेड डांगे सज्जन और निष्ठावान होंगे, लेकिन वे अुस बोलशेविक पार्टीके अेक मतान्ध कार्यकर्ता हैं, जो दुनियामें मास्कोका नेतृत्व चाहती है। सदिच्छा और निष्ठा गलत विचारका कुछ नहीं बिगाड़ सकती, बल्कि वह गलत विचार ही अुस निष्ठाका रूप ले लेता है। मतान्धोंसे कोअी बहस नहीं हो सकती।

कॉम० डांगे तथा दूसरे छोटे-मोटे कम्युनिस्ट जब यह कहते हैं कि वे किसानोंको जमीनके मालिक बननेमें मदद करना चाहते हैं, तो वे अेक अैसी बात कहते हैं जो वे करना नहीं चाहते और जिसे यदि सत्ता अुनके हाथमें हो तो वे करने नहीं देंगे। क्योंकि वे लोग जमीन पर किसानकी मालिकी नहीं चाहते, राज्यकी मालिकी चाहते हैं; सामूहिक और सरकारी खेतोंकी व्यवस्था करना चाहते हैं, जिन पर किसानोंकी हैसियत राज्यके लिअे काम करनेवाले खेतिहर मजदूरोंकी होगी। कम्युनिस्टोंकी पितृभूमि सोवियट रूसको अिस बातका गर्व है कि अुनके यहां ९९ प्रतिशत भूमि राज्यकी है, और किसानोंकी वैयक्तिक मालिकी नहीं है। जमीन किसानोंमें बांटी जाय, यह मार्क्सवादका मत ही नहीं है। मैंने खुद यह बात लेनिनके मुंहसे सुनी है। वह 'निजी मालिकी या सम्मिलित मालिकी नहीं, राज्यकी मालिकी' चाहता था। लेकिन साम्यवाद सम्मिलित मालिकी हीं है, न कि निजी मालिकी या राज्यकी मालिकी। 'निजी मालिकी' की मांग तो पूंजीवादी करते हैं। कम्युनिस्ट जमीन पर किसानोंकी निजी मालिकीको प्रोत्साहन देते हैं अपनी लड़ाअीमें अुनकी मदद लेनेके लिअे, किसानोंके लाभके लिअे नहीं। वे खूब जानते हैं कि कम्युनिज्ममें अैसा नहीं होता। अिसमें शक नहीं कि पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लावाकिया, पोलैंड, बाल्कन प्रदेश आदि जो देश अभी-अभी अुनके हाथमें आये, अुनमें बोलशेविकोंने पहले जमीन किसानोंमें तकसीम की। लेकिन बहुत ही जल्दी राज्यकी मालिकीमें खेतीका समूहीकरण शुरू कर दिया और राज्यकी तथा सामूहिक खेती कायम कर दी। अुसमें जो लोग पहले स्वतंत्र किसान थे, वे सिर्फ मजदूरी पानेवाले गुलाम हो गये। यहां भी वे लोग अैसा ही करेंगे। हिंसासे हो या शान्तिसे, राज्य किसानोंसे अुनकी जमीन छीन लेगा।

कॉम० डांगे किसानोंकी मुसीबत पर झूठे आंसू बहाते हैं। लेकिन अुनके दलके शासनमें या स्टालिनकी ओरसे वे खुद यहांके फौजी गवर्नर हो जायं और सामन्तशाही तथा जमींदारी खतम हो जाय, तब भी ये सारी चीजें नहीं की जावेंगी। सिर्फ सामंतशाही और जमींदारीका नाश कर देनेसे किसानोंका अुद्धार नहीं होगा। पूर्वी युरोपमें किसानोंको जमीन बांटी गअी थी। लेकिन बादमें अुन्होंने देखा कि वे अपनी अिस जमीन पर खेती नहीं कर सकते। क्योंकि खेतीके साधन अुनके पास नहीं हैं। राज्यने कहा कि अगर वे राज्यकी मदद चाहते हैं, तो अुन्हें अपनी जमीनका समूहीकरण करना चाहिये। किसी दूसरी तरह रहना संभव नहीं था, जीना भी संभव नहीं था, अिसलिअे अुन्हें सरकारका यह प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा और राज्यके लिअे शर्तबन्द मजदूरोंकी तरह काम करनेके लिअे राजी होना पड़ा। रूसमें राज्य अिन सामूहिक खेतियों पर अपने ट्रेक्टरोंके बल पर, जो कि खेती करनेवालोंको बहुत कड़ी शर्तों पर दिये जाते हैं, बहुत ज्यादा लगान वसूल करता है। अिस तरह, यह भी सामन्तशाहीका अेक दूसरा या आधुनिक प्रकार है। ट्रेक्टरों पर राज्यका अेकाधिकार होता है, अुन पर सामूहिक खेती-संघों (collectives) की मालिकी नहीं होती। हमारे कम्युनिस्ट भारतमें यही प्रणाली दाखिल करना चाहते हैं, और अिसे साम्यवादका नाम देते हैं। कम्युनिस्ट भी राज्यकी नौकरशाही, सेना और पुलिसको अुत्पादक मजदूरोंकी मेहनत पर ही रख सकते हैं, अुसके बिना नहीं; और परोपजीवियोंके अिसी कथित साम्यवादको वे लोग भारतमें लाना चाहते हैं। अिस प्रणालीको साम्यवादका नाम देनेमें किसीको भी शर्म आनी चाहिये।

साम्यवाद तब तक नहीं आ सकता, जब तक कि सारी जमीन और खेतीके साधन किसानोंके ही नहीं हो जाते, और किसान लोग स्वयं अपने लाभके ही लिअे सामूहिक ढंगसे सारी खेती नहीं करते। अुसमें राज्यकी दस्तंदाजी नहीं होनी चाहिये, और न राज्यको अुनकी रक्षाका ही बहाना करना चाहिये।

साम्यवाद अगर सच्चा साम्यवाद हो, तब तो ठीक है। अन्यथा साम्यवाद-नामधारी किसी भी चीजकी सराहना करनेसे न तो हमारी कोअी समस्या हल होगी, और न वह सच्चा साम्यवाद ही बनेगा। वह तो आकर्षक नामके मोहमें पड़कर अेक पाखण्डकी प्रशंसा करना होगा। हिंसाका आश्रय लेकर, अूपरसे साम्यवादकी स्थापना नहीं हो सकती। धागा अगर अुलझ गया है, तो अुसे काट देनेसे वह सुलझ गया नहीं कहा जा सकता। बल्कि परिश्रमपूर्वक अेक अेक गुत्थी छोड़नेसे ही वह सुलझ सकता है। संभव तो यह है कि बोलशेविज्मकी बजाय हमें अन्धाधुंधीसे गुजरना पड़े। बोलशेविज्म ही पूंजीवादको जिन्दा रखेगा। फतह, कॉम० डांगे! खुश हों!

म० प० त० आचार्य

[नोट: — अपनी 'गांधी और साम्यवाद' नामकी नव-प्रकाशित पुस्तकमें मैंने कहा है कि भारतमें साम्यवादका जो रूप प्रगट हुआ है, वह रूसमें प्रचलित मार्क्सवाद ही है और वह राष्ट्रीय पूंजीवाद है। श्री आचार्यने यह विषय बहुत विशद ढंगसे रखा है, अिसके लिअे मैं अुन्हें धन्यवाद देता हूं।

— कि० ध० म०]

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२० अक्तूबर १९५१

## तीसरा रास्ता

श्री विनोबा भावेकी भूमिदान-यात्रा भारतके अितिहासमें अेक महत्त्वकी और आशाभरी घटना है। तेलंगानाकी यात्रामें जब अुन्हें भूमि मिली, तब चंद लोगोंने कहा कि साम्यवादियोंके आतंकसे त्रस्त हुअे लोगोंको भूमि दिये बिना चारा ही नहीं था। और जगह अुन्हें अैसी जमीन मिलना संभव नहीं।

अगर अैसा ही होता, तो भी तेलंगानाके भूमिदानका महत्त्व कम नहीं होता। जहां रोग है वहीं पर लोग दवा लेंगे। लोग कड़ुअी लेकिन रास्त दवा लेनेको तैयार हुअे और लोगोंको दवा देनेवाले सच्चे वैद्य मिले, यही बड़ी बात थी। लेकिन अब जो भूमि अुन्हें स्थान-स्थान पर मिल रही है, अुससे सिद्ध होता है कि हिन्दुस्तानमें दैवी परिवर्तन या सात्विक क्रांतिका वायुमंडल भगवान् अपने अेक पवित्र भक्तके द्वारा पैदा कर रहा है।

सचमुच विनोबाजीकी श्रद्धा और आस्तिकता महात्माजीकी परंपराकी है। हमारे देशमें अैसे आस्तिक लोग समय-समय पर पैदा होते आये हैं, यह कोअी अनहोनी बात नहीं है। किन्तु देशके सामान्य लोग अैसोंकी बात सुननेको तैयार होते हैं, यही बताता है कि भारतवर्षकी प्रजा आस्तिक है। अुसमें धर्मका प्राण प्रज्वलित हो सकता है।

महात्मा गांधीने राष्ट्रको सत्य और अहिंसाकी दीक्षा दी और लोग सत्याग्रहके लिअे तैयार हो गये। अंग्रेजोंका राज्य अेक जबरदस्त संस्था — कॉरपोरेशन था। (और अुन्हींका तत्त्वज्ञान कहता है कि संस्था या कॉरपोरेशनकी आत्मा नहीं होती।) अैसे अेक जबरदस्त कॉरपोरेशनकी आत्मशक्तिका परिचय करनेका काम गांधीजीके सत्याग्रहने किया।

अब अहिंसा और सत्यके साथ अपरिग्रह और अस्तेयको हाथमें लेनेकी नौबत आयी है। श्री विनोबाने देखा कि आजके जमानेका प्रधान दोष है धन-निष्ठा। अुसे दूर करनेके लिअे जो धन संग्रहका प्रतीक है, अुस पैसेको ही जीवन-क्रममें अप्रतिष्ठित करना जरूरी है। अुपवासपूर्वक चिंतन करके वे अेक निर्णय पर पहुंचे। और अुन्होंने धनका दान लेनेसे अिनकार किया। धन कमानेकी बात अुनके पास थी ही नहीं।

दुनियामें श्रम और धन दो तत्त्व हैं। श्रमसे बचना हो, तो धनसंग्रह करना चाहिये। जब तक धनकी प्रतिष्ठा है, तब तक श्रम चाहे जितना बढ़े वह प्रतिष्ठित होनेका नहीं। अुन्होंने धनको अप्रतिष्ठित किया और श्रमकी प्रतिष्ठा बढ़ाअी। अितना जीवन-परिवर्तन करते ही अुनको अपरिग्रह व्रतकी, अथवा परिग्रह कम करनेकी दीक्षा देनेका अधिकार प्राप्त हुआ। और भारतकी भूमि, भारतकी जनता धर्मका असर कबूल करनेकी अपनी परंपरा भूली नहीं है, अिसका सबूत अनेक भूमिपतियोंने दिया।

हम कहते आये हैं कि रशियाके पास अेक रास्ता है। अमेरिकाके पास दूसरा रास्ता है। भारतका रास्ता तीसरा है। लेकिन अुसमें अिस तीसरे रास्तेका चैतन्य आज तक अुत्कट रूपसे प्रकट नहीं हुआ था। कानूनके द्वारा, सरकारके सामर्थ्यके द्वारा, अगर वह प्रकट होता, तो अुसे हम तीसरा रास्ता नहीं कह सकते थे। जिस भूमिदान-यज्ञके श्री विनोबाजी अध्वर्यु हैं, अुस दानमें और अमेरिकामें से जो सहायताका दान सारी दुनियामें फैल रहा है, अुसमें आसमान जमीनका अंतर है। दोनोंमें दीर्घ-दृष्टि है सही। किन्तु अेकमें द्रव्यशक्ति पर विश्वास है। वे द्रव्यलोभकी वीणा पर अपना राग बजाते हैं। दूसरे दानकी बुनियादमें आत्मशक्ति है। अुसका भजन सात्विक है और अंतमें अुसीकी विजय हो सकती है। सम्राट ययाति और सम्राट अशोक दोनोंने राज्य-वैभवका और राज्य-सामर्थ्यका असाधारण अनुभव करनेके बाद तय किया कि भोग और अैश्वर्यमें न शांति है न विश्वकल्याण। संग्रहको कम करो, खर्चको कम करो, तभी आत्मशक्ति जाग्रत होगी और दुनियामें शांति और बंधुता फैल सकेगी।

(अक्तूबर '५१ के 'मंगल प्रभात' से)

काका कालेलकर

## श्री मणिलाल गांधीका सविनय कानूनभंग

दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारकी रंगभेदकी नीतिसे संबंध रखनेवाले कानूनोंका शान्तिपूर्वक और अहिंसक ढंगसे भंग करके अुनके खिलाफ श्री मणिलाल गांधीने अपना विरोध प्रगट किया है। अिन कानूनोंके अनुसार किसी अेशियावासीका युरोपियन लोगोंके लिअे सुरक्षित सार्वजनिक वाचनालयों या अैसे ही किसी दूसरे स्थान पर जाना या अुनके लिअे निश्चित बेंच पर बैठना तक जुर्म करार दिया गया है। श्री मणिलालभाअी यह कथित अपराध खुले आम और बार बार कर रहे हैं। पुलिस अुनके अिस कानूनभंगकी नोंध ले लेती है, पर अभी तक सरकारने अुनके खिलाफ कोअी कार्रवाअी नहीं की है। यह अच्छा है कि सरकार अिस कानूनभंगके लिअे अुनके खिलाफ कोअी कदम नहीं अुठाती और दुनियाके सामने ज्यादा हास्यास्पद होनेसे बचती है। अैसे कानून सरकारको बनाने ही नहीं चाहिये थे, लेकिन दुष्ट और अीर्ष्यालु लोगोंके प्रभावमें आकर अुसने अुन्हें बनाया है। मेरा विश्वास है कि दक्षिण अफ्रीकाके प्रधान मंत्री, जो कि अीसाअी धर्माधिकारी भी हैं, यह महसूस करते हैं कि अुनके राज्यकी नीति और अीसाअी धर्मके सिद्धान्तोंमें कोअी मेल नहीं ह। यदि किसी कारणसे अुनके लिअे अपनी सरकार अुत्तम अीसाअी सिद्धान्तोंके अनुसार चलाना संभव नहीं ह, तो मैं अुम्मीद करता हूं कि अुनकी सरकार गलत कानूनको निकम्मा करनेकी अिस रीतिको सह लेगी।

अिन कानूनोंसे पीड़ित और भी अनेक लोगोंको श्री मणिलाल गांधीके अुदाहरणका अनुकरण करना चाहिय, और शांति परंतु दृढ़ताके साथ अिन कानूनोंको तोड़ना चाहिये। न्यायप्रिय युरोपियनोंको भी — मेरा खयाल है कि अुनकी संख्या काफी बड़ी है — अिन अहिंसक कानून तोड़नवालोंके साथ खुले आम अपनी सहानुभूति प्रगट करनी चाहिय। कानून तोड़नेवालोंके खिलाफ कोअी कार्रवाअी की जाय, तो अुसका अुन्ह स्वागत करना चाहिये; और यदि सरकार अुनके अिस कानूनभंगकी अुपक्षा करे, तब तो अुनका अभिप्राय सिद्ध हो ही जाता है। तब अुन्हें शांतिपूर्वक अपना यह कार्यक्रम जारी रखना चाहिये, क्योंकि वह तो सचमुच अुनका स्वाभाविक अधिकार है।

किसी अेक क्षत्रमें जब अैसा कानून अिस तरह निकम्मा बना दिया जायगा, तो दूसर क्षेत्रोंम भी अुसे बेकार करनका रास्ता सूझगा। चूंकि यह कानून नीति और न्यायके बुनियादी अुसूलोंके खिलाफ है, अिसलिअे अुसके अहिंसक भंगमें शुद्ध नीति-भावनाका भी अुल्लंघन नहीं है, जब कि अुसे भयपूर्वक स्वीकार करनेम यह जरूर होता है।

वर्धा, ९-१०-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

## भाषा संबंधी विवादकी पुनरावृत्ति

पूरा विचार करनेके बाद जिन नीतियोंका निश्चय हुआ है, अुन पर भी चलनेकी जब अिच्छा नहीं होती, तब थोड़ा ठहरकर फिर अुसी विषय पर विवाद शुरू कर दिया जाता है। विश्वविद्यालयोंमें शिक्षाका माध्यम क्या हो, यह विवाद अिसी श्रेणीका है। जहां तक 'हरिजन' का संबंध है, मैं अुसका अंत कर देना चाहता हूं। अिस विषय पर हमने अपना दृष्टिकोण बार-बार साफ किया है, और मुझे लगता है कि अुस पर फिर विवाद करनेसे कोअी अुपयोगी नतीजा हासिल नहीं होगा।

'हरिजन' की रायमें विश्वविद्यालयोंमें भी सामान्य तौर पर शिक्षाका माध्यम प्रादेशिक भाषा ही होनी चाहिये।

अपवाद :

१. अखिल भारतीय संस्थामें, फिर वह संस्था कहीं भी क्यों न हो और वहां जो शिक्षा दी जा रही हो वह विश्वविद्यालयकी कक्षाकी हो या अुससे कम दर्जेकी, शिक्षाका माध्यम हिन्दी ही हो।

२. जिन अध्यापकोंको दूसरे प्रांतोंसे बुलाया गया है या जिनकी नियुक्ति खास तौर पर की गअी है, अुन्हें यदि अुस प्रादेशिक भाषाका परिचय नहीं है, तो अुन्हें या तो अिस भाषाको सीखनेके लिअे आवश्यक समय तक या अपने पूरे कार्यकाल तक हिन्दीका अुपयोग करनेकी छूट दी जा सकती है।

३. दूसरे प्रांतोंसे आये हुअे विद्यार्थियोंको प्रादेशिक भाषाके बजाय हिन्दीमें अुत्तर लिखनेकी सुविधा दी जाय। लेकिन वे यह मांग नहीं रख सकते कि अुनकी पढ़ाअी भी हिन्दीमें हो; अिसके सिवाय, अुन्हें प्रादेशिक भाषा भी सीखनी चाहिये।

कहनेकी जरूरत नहीं कि हिन्दी तो हरअेक विद्यार्थीको सीखनी ही है और अुसकी अुपेक्षा नहीं की जा सकती। और हिन्दी पर विद्यार्थीका अधिकार, आजके स्नातकका अंग्रेजी पर जितना होता है, अुससे अधिक होना चाहिये। मैं मानता हूं कि यही व्यवस्था स्वाभाविक है, व्यावहारिक है और शिक्षाके मान्य सिद्धान्तोंके अनुकूल है।

फिर भी मैं विश्वविद्यालयके सारे शिक्षकों और अध्यापकोंके सामने यह सुझाव रखनेके लिअे तैयार हूं :

> आप पहले यह मान लें कि दिसम्बर ३१, सन् '५१ के बाद आपको अंग्रेजीका व्यवहार छोड़ देना है। जनवरी १, सन् '५२ से आप हिन्दी या प्रादेशिक भाषामें से किसी भी अेकको चुन लें और काम शुरू कर दें। यदि आपको लगता है कि प्रादेशिक भाषाकी अपेक्षा हिन्दी द्वारा सिखाना आपके लिअे ज्यादा अनुकूल होगा, तो हिन्दी द्वारा सिखाने लग जाअिये। फिर अुचित समय तक अिस प्रयोगके क्या परिणाम होते हैं, अिसका निरीक्षण करें।
>
> मैं शुरू-शुरूमें पारिभाषिक शब्दोंकी चिन्तामें पड़ना नहीं चाहता। अध्यापक लोग अपनी अिच्छाके अनुसार अुन्हें गढ़ लें और भूल-भ्रम टालनेके खयालसे अुनका अुपयोग विदेशी पारिभाषिक शब्दोंके साथ करते रहें। यदि वे अैसे शब्द गढ़नेमें समर्थ नहीं हैं या गढ़नेके अिच्छुक नहीं हैं और दूसरोंके सुझाये हुअे शब्द स्वीकार करना नहीं चाहते, तो आजकी अवस्थामें मैं अुन्हें विदेशी पारिभाषिक शब्दोंका ही अुपयोग करने दूंगा। हमारा पहला और तत्काल करनेका काम यह है कि हम बिना देर किये अंग्रेजीका परित्याग कर दें, क्योंकि यह बात अस्वाभाविक है और शिक्षाके सिद्धान्तोंके विरुद्ध है।

अिस विषयकी चर्चा अब समाप्त की जाती है।

वर्धा, २७-९-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

## मध्यप्रदेशकी जनतासे अपील

ता० १२ सितम्बरको मैं दिल्लीकी ओर जानेके लिअे वर्धासे निकल पड़ा। जिस भूदान-यज्ञका आरंभ तेलंगानामें बहुत अच्छी तरहसे हुआ था, अुसीको सारे हिन्दुस्तान भरमें प्रचलित करनेके अुद्देश्यसे मेरी यह यात्रा शुरू हुअी है। आज ता० ७ अक्तूबरके दिन मैं मध्यप्रदेश छोड़कर आगे अुत्तर प्रदेशमें प्रवेश कर रहा हूं। ता० २ और ३ अक्तूबरको सागरमें सर्वोदय सम्मेलन बुलाया था। अुसमें कार्यकर्ताओंने संकल्प किया है कि मध्यप्रदेशसे कमसे कम अेक लाख अेकड़ जमीन भूदान-यज्ञमें प्राप्त की जाय। अिस कामके लिअे मैंने अपनी ओरसे निम्न लिखित मनुष्योंकी अेक प्रादेशिक समिति मुकर्रर की है :

१. श्री दादाभाअी नाअीक,
२. श्री अप्पाजी गांधी,
३. श्री राजेन्द्र मालपाणी

अिस प्रादेशिक समितिकी ओरसे हर जिलेमें कार्य करनेके लिअे मेरी संमतिसे जिम्मेदार कार्यकर्ता नियुक्त किये जावेंगे।

अिस समितिके दो सज्जन अिस यात्रामें मेरे साथ घूम चुके हैं। जमीनें प्राप्त करनेकी अनाक्रमणकारी और विनययुक्त रीति, जो मैं चाहता हूं, अुसका अुन्हें अनुभव हुआ है। यही समिति नअी जमीनें प्राप्त करेगी, और प्राप्त की हुअी जमीनें गैररोजगार भूमिहीनोंमें तकसीम भी करेगी। अुसमें खास ध्यान हरिजनोंका रखा जायगा। जहां जमीनें मिली हैं, वहींके लोगोंमें वे तकसीम होंगी।

अिस बारेमें सरकारसे पत्र-व्यवहार और अन्य अुचित कार्यवाही करनेका अधिकार समितिको रहेगा। अुसके लिअे जरूरी नियम समिति बना लेगी, जो प्रकाशित किये जावेंगे।

अिस समितिमें हेतुपूर्वक अैसे ही लोग रखे गये हैं, जो विशेष वजनदार नहीं कहे जा सकते। वे सेवक तो हैं, लेकिन अुनकी शक्ति मर्यादित है। मैं अुम्मीद करता हूं कि अिस काममें सब प्रतिष्ठित सज्जनोंका, जनताका और सरकारका भी अुन्हें सहकार मिलेगा, और देशकी अेक महान समस्या शांतिमय तरीकेसे हल करनेके लिअे राह खुल जायगी।

मालथोन, ७-१०-'५१ **विनोबा**

## पण्णै आश्रमकी रिपोर्ट – २

### गांवोंके धन्धे नष्ट क्यों हो रहे हैं ?

कुमारप्पाजीने जस्तेकी चद्दरोंका निवास बनानेसे अिन्कार करते हुअे गांववालोंको समझाया कि हमें अपनी प्राथमिक जरूरतोंके लिअे बड़े अुद्योगोंकी चीजें छूटसे काममें क्यों नहीं लेनी चाहियें। अिस पर अुनसे कअी प्रश्न पूछे गये, जिनके अुन्होंने जानकारीभरे अुत्तर दिये। गांववालोंको यह समझाया गया कि जस्ता खानसे निकलनेवाली धातु है, अिसलिअे अुसकी मात्रा सीमित है। और कम मात्रामें मिलनेवाले अैसे पदार्थोंका अुपयोग हिंसाको जन्म देता है। जहां तक हम अुनका अुपयोग करते हैं, वहां तक हम विश्वयुद्धको जन्म देनेमें कारण बनते हैं।

कुमारप्पाजीने यह भी समझाया कि कारखानोंमें बननेवाली ये चीजें गांवमें बननेवाले खपरैलों और अींटोंकी जगह लेती हैं। कारखानेकी बनी अिन चीजोंका अुपयोग करना अुस डालको काटने जैसा है, जिस पर हम बैठे हैं। जब हम किसी गांवकी पुनर्रचनाके लिअे वहां जाते हैं, तब हमें अैसा कोअी काम नहीं करना चाहिये, जो अुसकी बरबादी करनेवाला हो। हमारे गांव अेकके बाद अेक अुद्योग अिसलिअे खो रहे हैं कि गांवके लोग कारखानोंमें बनी चीजोंको प्रश्रय देने लगे हैं। अिसी तरह अुन्होंने अिस तरफ भी लोगोंका ध्यान खींचा कि कारखानोंमें बने जूते गांवमें बने चप्पलोंकी जगह ले रहे हैं। ये सब बातें हमारे गांवोंको बरबाद कर रही

www.vinoba.in

हैं। पैसा शहरोंमें अिकट्ठा हो रहा है और गांववाले जो पैसा खुद पैदा करते हैं, अुसका बहुत बड़ा हिस्सा अुन्हें अिन बरबाद करनेवाली चीजोंके बदलेमें शहरोंको भेजना पड़ता है। अिस पर जिस ग्रामवासीने जस्तेका निवास बनानेका प्रस्ताव रखा था, अुसने अपना प्रस्ताव तुरन्त वापस ले लिया और लकड़ी तथा गारेकी झोंपड़ी तैयार करनेका वचन दिया। सब लोगोंने कुमारप्पाजीकी बात समझ ली थी। अिसके फलस्वरूप ग्रामोद्योगों और ग्राम-अर्थरचना पर गहरी चर्चा हुअी, जो हमारा ध्येय होना चाहिये।

अिसके बाद नारियल फोड़ने और ताड़गुड़की पपड़ी बांटनेकी सादी विधि पूरी हुअी। दोपहरकी तेज धूप थी, अिसलिअे सबको कुअेंका पानी जी भर कर पीनेको दिया गया।

### लम्बे समयके कार्यक्रम

कुअेंकी अुद्घाटन विधि पूरी होनेके बाद सारे लोग आमकी छायामें जाकर बैठ गये, जहां कुमारप्पाजीने अुन्हें समझाया कि कुआं खोदने, पेड़ लगाने, सार्वजनिक अिमारतें खड़ी करने जैसे लम्बे समयके कामोंका ग्राम्य-अर्थरचनामें क्या स्थान है। अुन्होंने कहा, मनुष्य सदा अमर बननेकी अभिलाषा रखता है। अमरताका जरूरी तौर पर यह अर्थ नहीं है कि शारीरिक रूपमें नित्य जीवित रहा जाय। आगे आनेवाली पीढ़ियोंकी हम अपने कामसे जो सेवा करते हैं, अुस सेवाके रूपमें भी हम शरीर छूट जानेके बाद जीवित रह सकते हैं। जिस कुअेंका अुद्घाटन अभी किया गया, अुसने बेशक आज गर्मीके समय सारे अुपस्थित लोगोंको ताजा और ठंडा पानी दिया। लेकिन संभव है हमारे मर जानेके बाद भी वह कअी दशकों तक अैसा करता रहे। अुस तरह आजसे १०० साल बाद अगर कोअी प्यासा राहगीर अिस कुअेंके पानीसे अपनी प्यास बुझाता है, तो अुसकी सेवाका पुण्य भी हमें मिलेगा और अुस सेवाके रूपमें तब भी हम जिन्दे ही रहेंगे। अुन्होंने आगे कहा: "हम नहीं जानते कि आज हम जिस आमके पेड़की छायामें बैठे हैं, अुसे किसने लगाया था। यह बहुत पुराना पेड़ है; शायद अिसकी अुमर ८० बरससे भी ज्यादा हो। लेकिन वह आज भी हमें आसरा देता है। और चूंकि अिस पेड़के लगानेवालेका काम मनुष्यों, बन्दरों और पक्षियोंको आसरा देता है, अिसलिअे हम आज भी अुसे आशीर्वाद देते हैं। हमारी संस्कृतिमें जीवनकी यही परम्परागत दृष्टि है। कअी काम अैसे हैं, जो हम अपने ही लाभके लिअे करते हैं। लेकिन कुछ काम अैसे भी होते हैं, जो हम दीर्घदृष्टिसे करते हैं। अुदाहरणके लिअे, अिस खेतमें हमने टमाटरके पौधे लगाये हैं। अगले दो-तीन महीनोंमें हम अिनका लाभ अुठानेकी आशा रखते हैं। यह दृष्टि थोड़े समयकी है। हमारे ज्यादातर काम अिसी तरहके होते हैं। लेकिन जब तक हम अिस कुअेंको खोदने जैसे या अिस पेड़को लगाने जैसे कोअी लम्बे समयके जनहितके काम नहीं करते, तब तक जीवन पूर्ण नहीं माना जायगा। हम नहीं जानते कि जिसने यह पेड़ लगाया, अुसने खुदने अिसके मीठे फलोंका अुपभोग किया या नहीं, लेकिन हमारे आशीर्वाद तो अुसे मिलते हैं। अिसलिअे हमें सिर्फ अैसे ही कामोंमें भाग नहीं लेना चाहिये, जिनका हमें ही तुरन्त लाभ मिले; बल्कि अैसे कामोंमें भी भाग लेना चाहिये, जिनका सारे समाजको लाभ मिलना निश्चित हो। हमारे अिस तरहके समाजहितके काम न कर सकनेके कारण ही हमें ग्राम-जीवनमें आज कअी तरहके कष्ट अुठाने पड़ते हैं।

"पुराने जमानेमें धनी किसान सार्वजनिक लाभके लिअे धर्मशालाअें बनवाते थे, तालाब खुदवाते थे, सड़कें बनवाते थे और ढोरोंके पानी पीनेके लिअे हौज बनवाते थे। अिस तरह किसान खुद या दूसरे गांववाले गांवके पैसेका अुपभोग करते थे। अिस तरीकेसे तात्कालिक आवश्यकताअें पूरी की जाती थीं और भावी लाभोंका प्रबन्ध भी किया जाता था। मौजूदा जमानेमें जीवनके अूंचे मानदंड — जिससे अुनका मतलब यह है कि आदमी जितना धन कमा सके अुतना खुद ही खर्च करे — के पाश्चात्य विचारोंने हमारे यहां घुसकर रोजमर्राके अुपयोगकी चीजोंकी मात्रा या संख्याके लिअे हमारी लालसा बढ़ा दी है। आज अेक धनी किसान न तो धर्मशाला बनवाता है और न तालाबकी मरम्मत करवाता है, बल्कि कोअी सस्ती पुरानी मोटर खरीदना चाहता है और जो भी पैसा पैदा करता है सब अपने सुख-भोगमें ही खर्च करनेकी कोशिश करता है। अिसका नतीजा यह होता है कि या तो गांवका पैसा विदेशोंको चला जाता है या हमारे कुछ बड़े शहरोंमें चला जाता है। अिससे गांवके लोग कंगाल हो जाते हैं। तालाब बनवानेमें गांवके बहुतसे लोगोंको रोजी मिल सकती थी। अुसका अर्थ यह हुआ कि गांवमें धनी किसानने जो अनाज वगैरा पैदा किया, अुसका गांववालोंको खिलानेमें अुपयोग होता। लेकिन अब मोटर खरीदनेके लिअे वह अपना अनाज नजदीकके शहरमें बेचनेको भेजता है और जो पैसा मिलता है, अुससे मोटर खरीदता है। अिससे हम भलीभांति देख सकते हैं कि धनी लोगोंके जीवन और कामोंमें यह परिवर्तन होनेसे गांववाले कैसे कंगाल बनते हैं।"

अन्तमें कुमारप्पाजीने गांववालोंसे अपील की कि वे सारे गांवके हितकी दृष्टिसे सोचें और गांवको जिस चीजकी जरूरत हो, वह सब अपने प्रयत्नसे प्राप्त करें। वे अपने ओछे स्वार्थकी दृष्टिसे कभी न सोचें और सार्वजनिक जरूरतें पूरी करनेकी सरकारसे आशा न रखें।

### सहकारी भोजन

गांववालोंको बुलाते समय यह प्रश्न अुठा था कि क्या दूरके गांवोंसे आनेवालोंके लिअे हमें खाना बनाना चाहिये। कुमारप्पाजीने कहा कि अुनसे अपना दोपहरका भोजन साथ लानेके लिअे कहा जाय, क्योंकि आश्रम कअी कारणोंसे अुनके भोजनकी व्यवस्था नहीं कर सकेगा। अिसलिअे बहुतसे ग्रामवासी अपना भोजन साथ लाये थे। अपने सदस्योंके लिअे हमने थोड़े दाल-भातका प्रबन्ध किया था। कुमारप्पाजीने सुझाया कि हर आदमी जो भोजन लाया है, अुसे अिकट्ठा किया जाय और सबमें समान रूपसे बांट दिया जाय; क्योंकि बहुतसे लोग अपना भोजन साथ नहीं लाये हैं और अिस सम्मेलनको देखने बड़ी संख्यामें आये हुअे गांवके हरिजन बालकोंको भी खाना खिलाना है। लोगोंको कतारोंमें बैठनेके लिअे कहा गया। भोजन रखनेके लिअे पत्तलें दी गअीं और जो भोजन अिकट्ठा हुआ था, वह सबमें बांट दिया गया — हरिजन बालकोंको सबसे पहले खिलाया गया। नतीजा यह हुआ कि हरअेकको अनेक प्रकारका स्वादिष्ट वनभोजन पाकर खूब सन्तोष हुआ। अिस तरह आश्रम पांचके लिअे तैयार किये गये भोजनसे ५० आदमियोंको सन्तुष्ट कर सका। कुमारप्पाजीके अेक सादे सुझावसे कठिन समस्या हल हो गअी। अुत्सवके अवसरकी शोभा कम किये बिना किफायत की गअी। अिस परसे यह कहा गया कि अिस दावतने बाअिबलमें वर्णित अुस चमत्कारका स्मरण करा दिया, जिसमें पांच चपातियों और दो मछलियोंसे अीसाने पांच हजार लोगोंको भोजन कराया था! (वहां हरअेकको भरपेट स्वादिष्ट भोजन कराया गया और बचा हुआ भोजन कअी टोकरियोंमें अिकट्ठा किया गया था।) यद्यपि आश्रमके पास दूर दूरसे अितनी बड़ी संख्यामें आये हुअे लोगोंको दोपहरमें खिलानेकी सुविधा नहीं थी, फिर भी सबके सहयोग और सद्भावनाके कारण अितने सादे तरीकेसे हरअेकको स्वादिष्ट भोजन देकर सन्तुष्ट किया जा सका।

(अंग्रेजीसे)

(अपूर्ण)
रा० रा०

www.vinoba.in

# मध्यभारतमें गोसेवा कार्य

मैं अिस बार ता० १८ जुलाअीसे २९ जुलाअी तक मध्यभारत गोसेवा कार्य देखनेके लिअे ग्वालियरसे बड़वानी तक घूमा। मध्यभारत गोसेवा संघके मंत्री श्री बैजनाथ महोदय मेरे साथ थे।

प्रथम ग्वालियरसे ७० मीलकी दूरी पर शिवपुरी गया। वहां अनुत्पादक पशुओंके लिअे अेक गोसदनकी योजना बनाअी गअी है। शिवपुरीसे १॥ मील दूरी पर मिलिटरी बैरेक्स थे, अुनमें से कुछको दुरुस्त करके गायोंको रखनेकी व्यवस्था की गयी है। करीब दस हजार रुपये दुरुस्तीमें लगे। मध्यभारत सरकारने पिछले वर्ष दो गोसदनोंके लिअे ६५ हजार रुपये देना स्वीकार किया था। अुनमें से अभी यह अेक तैयार हुआ है। दूसरा बनना बाकी है। अिस गोसदनको १२०० अेकड़ जमीन भी दी गअी है। फिलहाल यहां ४०-५० गायें आ गयी हैं। भिन्ड, मुरैना और श्योपुरसे थोड़े दिनोंमें करीब २०० गायें और आ जायंगी। अभी जो स्थान है, वहां अंदाज है कि ४०० पशु रह सकेंगे। गोसदनका काम श्री रामकृष्ण बक्षी कर रहे हैं, तथा श्री श्रीकृष्णजी शर्माकी देखभाल है। यह सोचा गया है कि यहां रखे गये बेकार पशुओंकी नसल न बढ़ने दी जाय। अधिक पशु होने पर चर्मालयका कार्य भी चालू करनेकी कल्पना है। शिवपुरीमें अेक जैन आश्रम भी है। वहांका कारोबार मुनि श्री विद्याविजयजी देखते हैं। वे बहुत विद्वान पुरुष हैं और बापजीके विधायक कामोंमें खूब श्रद्धा रखते हैं। आश्रमकी अेक गोशाला भी है। अुसमें बाहरसे कुछ गायें लायी गयी थीं। परंतु यह प्रयोग सफल नहीं रहा। पहले तो दूध खूब हुआ, लेकिन बादमें घटता गया। अतः अब अुन्होंने स्थानीय नसलको ही बढ़ावा देनेका विचार किया है। आश्रम अेक संस्कृत कॉलेज भी चलाता है। अुसमें काफी विद्यार्थी हैं। कॉलेजमें गोपालनका काम भी सिखानेका विचार हुआ है। नगरके कुछ मित्रोंसे बातचीत हुअी, तो अुन्होंने भी अिस बातको स्वीकार किया है कि कुछ अच्छे सांड़ रखकर नगरकी गायोंकी नसल सुधारी जाय।

शिवपरीसे हम गुना गये। श्री गेंदालालजी अग्रवाल वहांकी गोशालाके मंत्री हैं। गोशालामें अच्छे सांड़ तैयार करके गोसेवा संघकी दृष्टिके अनुसार आसपासकी नसल सुधारी जाय, अैसा प्रयत्न वे कर रहे हैं। गुनासे हम शाजापुर आये। यहांकी गोशालाका काम श्री मायाशंकरजी देखते हैं। श्री झालानीजी और नगरसेठ हिम्मतलालजीकी सहायतासे काम चलता है। काम बहुत छोटा है, लेकिन वह ठीक ढंगसे करनेकी अिच्छा है।

ता० २० को अुज्जैन आये। हीरा मिल्सके मैनेजर श्री जाल साहब यहांकी गोशालाका काम देखते हैं। यह गोशाला कॉटन मार्केट अेसोसियेशनकी तरफसे चल रही है। अिस अेसोसियेशनकी जायदादसे जो अुत्पन्न होता है, अुससे अिसे चलानेकी योजना है। परन्तु अेसोसियेशनकी व्यवस्थामें कुछ दोष आ गया है। अुसके कारण अुत्पन्न रुक गया है। और अिसी वजहसे गोशालाकी प्रगति भी रुकी हुअी है। संकोचवश अेसोसियेशनके पदाधिकारी अिसका कोअी अुपाय नहीं ढूंढ़ पा रहे हैं। व्यवस्था सुधर जाय और संकोच मिट जाय, तो शीघ्र ही यहांका काम काफी आगे बढ़ सकता है। अुज्जैनमें ही श्री दुर्गाशंकरजी नागरके साधना आश्रममें श्री सत्यात्माजी गोप्रेमी सज्जन हैं। वे भी कुछ गायें रखते हैं और विधिवत् अुनको पालते हैं। यहांसे ४० मील पर आगरमें मध्यभारत सरकारका मालवी नसल सुधारका फार्म है। समयाभावसे मैं वहां न जा सका।

अुज्जैनसे हम रतलाम आये। श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दारकी देखरेखमें यहांकी गोशालाका काम चल रहा है। गोशाला बड़ी है। साधन-सामग्री और नयी दृष्टि भी है। अपनी सहायताके लिअे वे अेक योग्य कार्यकर्ता रखनेका भी प्रयत्न कर रहे हैं। अुन्हें यदि योग्य कार्यकर्ता मिल जाय, तो काम अच्छा हो सकेगा। वहांसे ता० २२ को मंदसोर गये। श्री भैरवशंकरजी शर्मा गोशालाका काम देखते हैं। यह गोशाला भी बड़ी है। विशाल बीड़ है। अुत्साह भी है। लेकिन कुछ आपसी मतभेदके कारण अिसकी दयनीय दशा हो रही है। कुछ नौजवानोंने यहां अेक स्वतंत्र गोसेवा संघ कायम कर रखा है और शहरके मवेशियोंकी तकलीफ दूर करनेका प्रयत्न करते रहते हैं। गोशालाके बुजुर्ग और गोसेवा संघके नौजवान दोनों मिलकर काम करें, तो मध्यभारतकी सब गोशालाओंमें अिसका स्थान बहुत अूंचा हो सकता है।

रतलामसे हम अिंदौर आये। यहां दो-तीन बार जाने पर भी अभी तक मुझ यहांकी गोशाला देखनेका योग नहीं आया था। अुसके मंत्री कहीं बाहर गये हुअे थे। मुझे यह ज्ञात हुआ कि यहांके गोशालावालोंकी गोसेवा संघके नये विचारोंको अपनानेमें थोड़ी हिचक है। अिन दिनों अुन्होंने दूधके लिअे कुछ भैंसें भी गोशालामें रखी हैं। परंतु प्रयत्न करने पर यह गोशाला भी नयी दृष्टिके अनुसार चल सकेगी। अिन्दौरसे चार मीलकी दूरी पर कस्तूरबा ग्राम है। अुसके पास तीन सौ अेकड़ जमीन है। पासमें ही पानीका बड़ा तालाब है। कस्तूरबा ग्रामके लिअे आगे चलकर रोजाना चार-पांच मन तक दूधकी आवश्यकता होगी। साग, सब्जी, दूध तथा अनाज आदि भी वहीं पैदा करनेकी कल्पना है। सर्व-सेवा-संघका कृषि-गोसेवा-विभाग और कस्तूरबा ट्रस्ट दोनों मिलकर वहां पर यह काम चलायें, अैसी अेक योजना बनाअी गअी है। स्थानीय मालवी नसलकी गायें रखकर सिलेक्टिव ब्रीडिंगसे अुनकी नसल सुधारनेका निश्चय हुआ है। सेठ ब्रद्रीलालजीने अिस कार्यका प्रारंभ करनेके लिअे बढ़िया २५ मालवी गायें दानमें देना स्वीकार किया है। मैं अुम्मीद करता हूं कि दोनों संघ अिस योजनाको शीघ्र ही बाकायदा स्वीकृति देंगे और कस्तूरबा ग्राममें शीघ्र ही अिस कार्यका प्रारंभ हो जावेगा।

अिंदौरके बाद नेमाड़का दौरा शुरू हुआ। अिस दौरेमें श्री महोदयजीके अलावा श्री काशिनाथ त्रिवेदी भी साथ थे। मध्यभारत सरकारने सारे मध्यभारत प्रान्तमें तीन जगह नसल सुधार केन्द्र कायम करनेका तय किया है। तीनोंके लिअे करीब अेक लाख रुपया सालाना खर्च होगा। अेक केन्द्र हरियाना नसल सुधारका भिन्ड जिलेमें शुरू किया गया। दूसरा केन्द्र मालवी नसल सुधारका अुज्जैनके पास शुरू हुआ है। और तीसरा केन्द्र बड़वानीके आसपास नेमाड़ी नसल सुधारका शुरू किया है। अिन केन्द्रोंमें से हरियाना और मालवीके दो केन्द्र सरकार अपने पशुपालन-विभाग द्वारा चलायेगी और "नेमाड़ी नसल सुधारकेन्द्र" गोसेवा संघके सुपुर्द किया गया है। अिसका संचालन सर्व-सेवा-संघके कृषि-गोसेवा-विभागकी मध्यभारत शाखा द्वारा होगा। मध्यभारतके शाखा मंत्री श्री बैजनाथजी महोदय हैं। और श्री विश्वनाथजी खोड़े तथा श्री तख्तमलजी जैन सभासद हैं। केन्द्रका काम श्री रामचन्द्रजी जैन और चंपालालजी गोले कर रहे हैं। ये दोनों ही वर्धासे अिसका शिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। स्थानीय व्हेटरनरी ऑफिसर डॉ० मुकर्जीका अिसमें पूरा सहयोग रहता है। ग्रामनसल सुधारकी जो योजना गोसेवा संघने तैयार की है, वही स्वीकार की गयी है। यह कल्पना है कि आसपासके २० देहातोंमें सांड़ रखकर तथा वहांके रद्दी सांड़ोंको बधिया बना कर सारे गांवोंकी गायोंकी नसल सुधारी जाय। अुनमें जो अच्छे बछड़े-बछड़ी होंगे, अुनको विशेष मदद देकर अच्छे बनाये जायंगे। अिस क्षेत्रका गोवंश सुधर जाने पर क्षेत्रका क्रमशः विकास किया जायगा।

नेमाड़ जाते हुअे धार और मांडू भी अैतिहासिक स्थान होनेके कारण देखता गया।

मध्यभारतके कामका निरीक्षण करनेके बाद मुझे अैसा लग रहा है कि वहांकी जनता और सरकार दोनोंमें अुत्साह काफी है। गो-

www.vinoba.in

सेवा संघकी नयी विचारधाराको वे जल्दी समझ जाते हैं। गोसेवाकी लगन है। अुन्हें ठीक मार्गदर्शन और मदद मिलती रही, तो वहांका कार्य तेजीसे आगे बढ़ता रहेगा। गोसेवा संघ, वर्धामें आज तक शिक्षाके लिअे जितने भी विद्यार्थी या कार्यकर्ता आये, अुन सबमें मध्यभारतके विद्यार्थी बहुत ही सुयोग्य थे और आज भी हैं।

राधाकृष्ण बजाज

## टिप्पणियां

### पांच कोटि अेकड़ जमीन

विनोबा मध्यप्रदेशकी सीमा पार कर गये हैं, और अुत्तर प्रदेशमें प्रवेश कर चुके हैं। बीचमें अुनके मार्ग पर विन्ध्य प्रदेशका भी अेक हिस्सा आयेगा। भूदान-यज्ञमें लोगोंसे जो सहयोग मिल रहा है, वह अुत्साह-वर्धक है। ग्रामीण जनता और छोटे-छोटे किसान अुनके कार्यका मर्म और महत्त्व समझ गये हैं और अिस यज्ञमें अपना भाग अुदारतापूर्वक दे रहे हैं। बड़े जमींदार और शहरी तथा भद्रवर्गके लोगोंको, हमेशाकी तरह, बुद्धिपूर्वक अिस संदेशका महत्त्व समझनेमें और हृदयसे अुसका साथ देनेमें देर हो रही है।

लेकिन देर-सबेर वे भी या तो स्वेच्छापूर्वक या परिस्थितियोंसे मजबूर होकर जमानेकी पुकारको समझेंगे और जनताका अनुगमन करेंगे।

विनोबाने अपने अिस यज्ञके लिअे देश भरमें पांच करोड़ अेकड़ भूमिका लक्ष्य निश्चित किया है। गरीबोंकी सेवाके लिअे यह आंकड़ा कुछ बड़ा नहीं है, और अन्तमें तो अिस कामके लिअे अिससे भी ज्यादाकी जरूरत होगी। लेकिन जनता स्वेच्छापूर्वक पांच करोड़ अेकड़ दे दे, तो वह भारतीय जनताकी अहिंसक क्रान्ति कर सकनेकी योग्यताका अेक शुभ चिन्ह और प्रमाण होगा। अुससे अिस दिशामें सरकारी प्रयत्नके लिअे रास्ता तैयार हो जायगा। दुनियाके अुन दूसरे देशोंके लिअे यह अेक मार्गदर्शक अुदाहरण होगा, जिन्हें अपने भूखे और बे-जमीन किसानोंकी समस्या हल करनेके लिअे हिंसक क्रांतिके सिवा और कोअी चारा नहीं दीखता।

अुत्तर प्रदेशसे कम-से-कम अेक करोड़ भूमि मिलनेकी अपेक्षा है। दूसरे प्रान्तोंको भी अपना दान अिसी प्रमाणमें देना चाहिये। अुसके लिअे विनोबा ही प्रत्येक प्रांतमें जायं, अिसकी राह दाताओं और कार्यकर्ताओंको नहीं देखनी चाहिये। विनोबा प्रत्येक प्रान्तमें शायद पहुंच भी सकें, लेकिन हरअेक जिले या तहसीलमें जाना तो असंभव ही है; और हरअेक गांवमें जानेकी बात तो सोची ही नहीं जा सकती। तो प्रत्येक कार्यकर्ता जमीनके प्रत्येक मालिकके पास यह संदेश लेकर पहुंचे और मालिक अुस पर विचार करे और विनोबाको सूचित करे कि दरिद्रनारायणके लिअे हो रहे अिस यज्ञमें अुसका भाग क्या होगा। दिवाली आ रही है। हम कामना करें कि यह दिवाली भूमिहीनोंके लिअे भूमिकी भेंट लेकर आयगी।

वर्धा, १०-१०-'५१ कि० घ० म०

(अंग्रेजीसे)

### सेवाग्राम खादी-विद्यालयमें चरखा-जयंती

हर साल खादी-विद्यालयमें जयंतीके निमित्त भिन्न-भिन्न कार्यक्रम रखे जाते थे, लेकिन अिस वर्ष विशेष कारणोंसे केवल सूत्रयज्ञका कार्यक्रम रखा गया। यज्ञ सुबह ४॥ बजेसे शामको ४॥ बजे तक रहता था, जिसमें २ टोलियां बारी-बारीसे ३-३ घंटे कताअी करती थीं। विद्यार्थियोंके ४० चरखे तथा कार्यकर्ता भाअी-बहनोंके १५ चरखे यानी सप्ताहमें कुल मिलाकर ५५ चरखे चले। कार्यकर्ताओंके परिवारकी स्त्रियोंको भी अिसमें हिस्सा लेनेका अवसर मिले, अिस दृष्टिसे यज्ञमें सभी कार्यकर्ता तथा अुनके परिवारका भोजन खादी-विद्यालयके रसोड़ेमें रखा गया।

जयंती-कालमें १,००० गुंडियां कातनेका संकल्प किया था, क्योंकि यज्ञमें हिस्सा लेनेवाले कअी भाअी-बहिन अिसमें ज्यादा समय नहीं दे सकते थे और कुछ नौसिखिये थे। तो भी विशेष परिश्रमसे काम किया गया, अतः कुल गुंडियां १,५५२ कतीं। प्रतिदिन ६ घंटे कताअी करके ५ दिनके ३० घंटोंमें ज्यादा-से-ज्यादा २६ गुंडियां, १६ अंककी, विद्यार्थी भाअी श्री शामराव मुळेने कातीं। अिससे कम यानी २४ गुंडियां, ८ अंककी, ६ दिनके ३६ घंटेमें संघकी कार्यकर्त्री श्रीमती रुक्मिणीबाअी चौधरीने कातीं। कताअीके लिअे धुनाअी मोढ़ियेकी पूनियां भी दी गयी थीं।

ता० १ को विद्यालयके बहुतसे छात्र तथा कार्यकर्ता आसपासके ४५ देहातोंमें जयंती-कार्यक्रम चलानेके लिअे यहांसे रवाना हो गये। ता० २ को अुन्होंने अुस-अुस गांवमें प्रार्थना, सफाअी, झंडा-वंदन, प्रभात-फेरी, सूत्रयज्ञ तथा प्रचारात्मक भाषण आदि कार्यक्रम किये। और देहाती भाअी-बहनोंको रचनात्मक कार्यका महत्त्व समझाकर सर्वोदयकी ओर पुरस्सर करनेकी चेष्टा की।

जयंती-सप्ताहमें १७२ भाअी-बहनोंने हिस्सा लिया। फलतः फी व्यक्ति २॥ वर्गगंज खादी तैयार हो सके, अितना सूत (१,५५२ गुंडियां) कता। पिछले ६-७ वर्षोंसे हम औसत कपड़ेकी जरूरत ४-५ गज तक बढ़ानेकी दृष्टिसे करोड़ों रुपये खर्च करके विदेशोंसे मिलें मंगवानेकी कल्पनाअें राजकीय क्षेत्रोंमें चलनेकी बातें सुनते आ रहे हैं। पर अिस और अैसे यज्ञों परसे हमें जो अनुभव मिला है, अुससे तो यह साफ दीखता है कि निष्ठापूर्वक अैसे यज्ञ प्रतिवर्ष देशके सभी लोग करें, तो भी हमारी कपड़ेकी गरज काफी मात्रामें पूरी हो सकती है।

सेवाग्राम, ४-१०-'५१ संचालक
खादी-विद्यालय

हमारा नया प्रकाशन

**गांधी और साम्यवाद**

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–४–०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–९

विषय–सूची


| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| राष्ट्रीय योजना – दो निष्ठायें : १ साम्यवाद और राष्ट्रीय पूंजीवादमें भ्रान्ति | कि० घ० मशरूवाला | २९७ |
| | म० प० त० आचार्य | २९८ |
| तीसरा रास्ता | काका कालेलकर | ३०० |
| श्री मणिलाल गांधीका सविनय कानूनभंग | कि० घ० मशरूवाला | ३०० |
| भाषा संबन्धी विवादकी पुनरावृत्ति | कि० घ० मशरूवाला | ३०१ |
| मध्यप्रदेशकी जनतासे अपील | विनोबा | ३०१ |
| पण्णै आश्रमकी रिपोर्ट – २ | रा० रा० | ३०१ |
| मध्यभारतमें गोसेवा कार्य | राधाकृष्ण बजाज | ३०३ |
| टिप्पणियां : | | |
| शिमलामें चरखा-जयंती | राजगोपालन | २९८ |
| पांच कोटि अेकड़ जमीन | कि० ध० म० | ३०४ |
| सेवाग्राम खादी-विद्यालयमें चरखा-जयंती | | ३०४ |


www.vinoba.in